

पाठ परिचय-

यह पाठ एक नव निर्मित इंटरैक्टिव पाठ है जो प्राचीन भारतीय ग्रंथों और उनके प्रमुख लेखकों का परिचय देता है। इससे भारतीय सांस्कृतिक संपदा के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होगी- यही इस पाठ का उद्देश्य है।

(भारते वर्षे शास्त्राणां महती परम्परा श्रूयते। शास्त्राणि प्रमाणभूतानि समस्तज्ञानस्य स्रोतःस्वरूपाणि सन्ति। अस्मिन् पाठे प्रमुखशास्त्राणां निर्देशपूर्वकं तत्प्रवर्तकानाम् निरूपणं विद्यते। मनोरञ्जनाय पाठेऽस्मिन् प्रश्नोत्तरशैली आसादिता वर्तते।)

भारतीय शास्त्रों की एक महान परम्परा सुनने को मिलती है। शास्त्रों का स्वरूप ही समस्त ज्ञान का स्रोत है। इस पुस्तक में मुख्य ग्रंथों को उनके प्रवर्तकों द्वारा शिक्षाप्रद ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस पाठ में मनोरंजन के लिए प्रश्न-उत्तर शैली अपनाई गई है।

शास्त्रकाराः (शास्त्र रचयिता) – व्याख्या

(शिक्षकः कक्षायां प्रविशति, छात्राः सादरमुत्थाय तस्याभिवादनं कुर्वन्ति ।)

(शिक्षक कक्षा में प्रवेश करता है, छात्र खड़े होते हैं और सम्मानपूर्वक उसका स्वागत करते हैं।)

शिक्षकः- उपविशन्तु सर्वे। अद्य युष्माकं परिचयः संस्कृतशास्त्रैः भविष्यति।

शिक्षकः- सब लोग बैठ जाओ. आज आपका परिचय संस्कृत ग्रंथों से कराया जाएगा।

युवराजः- गुरुदेव । शास्त्रं किं भवति ?

युवराजः- गुरुदेव! धर्मग्रंथ क्या है?

शिक्षकः- शास्त्रं नाम ज्ञानस्य शासकमस्ति। मानवानां कर्तव्याकर्तव्यविषयान् तत् शिक्षयति। शास्त्रमेव अधुना अध्ययनविषयः (Subject) कथ्यते, पाश्चात्यदेशेषु अनुशासनम् (discipline) अपि अभिधीयते। तथापि शास्त्रस्य लक्षणं धर्मशास्त्रेषु इत्थं वर्तते –

अध्यापकः- शास्त्र नामक वस्तु ज्ञान की अधिष्ठात्री है। वह मनुष्य के कर्तव्य तथा अकर्तव्यों की शिक्षा देता है। आजकल शास्त्र को ही अध्ययन का विषय कहा जाता है। पश्चिमी देशों में इसे अनुशासन भी कहा जाता है। इसके बाद भी धर्मग्रन्थों में धर्मग्रन्थों की विशेषताएँ विद्यमान हैं –

प्रवृत्तिर्वा निवृत्तिर्वा नित्येन कृतकेन वा।पुंसां येनोपदिश्येत तच्छास्त्रमभिधीयते।

जिस माध्यम से मनुष्य को सांसारिक विषयों या मानव निर्मित विषयों के प्रति लगाव या वैराग्य का समुचित ज्ञान होता है उसे धर्म शास्त्र कहते हैं। इसका मतलब यह है कि जिस शास्त्र से हमें यह ज्ञान मिलता है कि कौन सा आचरण अपनाना है और कौन सा आचरण छोड़ना है, उसे धर्मशास्त्र कहा जाता है।

अभिनवः- अर्थात् शास्त्रं मानवेभ्यः कर्तव्यम् अकर्तव्यञ्च बोधयति। शास्त्रं नित्यं भवतु वेदरूपम्, अथवा कृतकं भवतु ऋष्यादिप्रणीतम्।

अभिनवः अर्थात् शास्त्र हमें मनुष्य के कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध कराते हैं। वेद रूपी ग्रन्थ नित्य हैं अथवा ऋषियों द्वारा रचित ग्रन्थ कृत्रिम हैं।

शिक्षकः- सम्यक् जानासि वत्स ! कृतकं शास्त्रं ऋषयः अन्ये विद्वांसः वा रचितवन्तः। सर्वप्रथम षट् वेदाङ्गानि शास्त्राणि सन्ति। तानि – शिक्षा, कल्पः, व्याकरणम्, निरुक्तम्, छन्दः ज्योतिषं चेति।

अध्यापकः- यह सही है, वत्स! कृत्रिम ग्रंथों की रचना ऋषि-मुनियों अथवा अन्य विद्वानों द्वारा की गयी है। सबसे पहले, छह ग्रंथ हैं जो वेदों का हिस्सा हैं – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष।

इमरानः- गुरुदेव ! एतेषां विषयाणां के-के प्रणेतारः ?

इमरानः गुरुदेव. इन विषयों के लेखक कौन हैं?

शिक्षकः- शृणुत यूयं सर्वे सावहितम्। शिक्षा उच्चारणप्रक्रियां बोधयति। पाणिनीयशिक्षा तस्याः प्रसिद्धो ग्रन्थः। कल्पः कर्मकाण्डग्रन्थः सूत्रात्मकः। बौधायन-भारद्वाज-गौतम वसिष्ठादयः ऋषयः अस्य शास्त्रस्य रचयितारः। व्याकरणं तु पाणिनिकृतं प्रसिद्धम्।

टीचरः- तुम लोग ध्यान से सुनो. शिक्षा से उच्चारण का ज्ञान होता है। पाणिनि शिक्षा उनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। कल्प एक सूत्रबद्ध कर्मकाण्ड ग्रन्थ है। बौधायन, भारद्वाज, गौतम, वशिष्ठ आदि ऋषि इस ग्रंथ के रचयिता हैं। पाणिनीकृत व्याकरण प्रसिद्ध है।

निरुक्तस्य कार्यं वेदार्थबोधः। तस्य रचयिता यास्कः। छन्दः पिङ्गलरचिते सूत्रग्रन्थे प्रारब्धम्। ज्योतिषं लगधरचितेन वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थेन प्रावर्तत।

निरुक्त का कार्य वेद का अर्थ समझाना है। इसके लेखक यास्क हैं। छंदशास्त्र पिंगल द्वारा लिखित पुस्तक है। लगध द्वारा लिखित वेदांग ज्योतिष ग्रंथ से ज्योतिष शास्त्र लिखा गया।

अब्राहमः- किमेतावन्तः एव शास्त्रकाराः सन्ति ?

इब्राहीमः- क्या ये सभी लोग शास्त्र लिख रहे हैं?

शिक्षकः- नहि नहि। एते प्रवर्तकाः एव। वस्तुतः महती परम्परा एतेषां शास्त्राणां परवर्तिभिः सञ्चालिता। किञ्च, दर्शनशास्त्राणि षट् देशेऽस्मिन् उपक्रान्तानि।

टीचरः- नहीं नहीं! ये सभी संस्थापक हैं. दरअसल, इन ग्रंथों की एक बड़ी परंपरा को पूर्व के लोगों ने आगे बढ़ाया है। क्योंकि इस देश में छह दर्शन प्रचलित थे।

श्रुतिः- आचार्यवर ! दर्शनानां के-के प्रवर्तकाः शास्त्रकाराः ?

श्रुतिः आचार्य श्रेष्ठ! दर्शनशास्त्र के लेखक कौन हैं?

शिक्षकः- सांख्यदर्शनस्य प्रवर्तकः कपिलः। योगदर्शनस्य पतञ्जलिः। एवं गौतमेन न्यायदर्शनं रचितं कणादेन च वैशेषिकदर्शनम्। जैमिनिना मीमांसादर्शनम्, बादरायणेन च वेदान्तदर्शनं प्रणीतम्। सर्वेषां शताधिकाः व्याख्यातारः स्वतन्त्रग्रन्थकाराश्च वर्तन्ते।

अध्यापकः- कपिल सांख्य दर्शन का प्रचार करने जा रहे हैं। योगदर्शन के पतंजलि. इसी प्रकार न्याय दर्शन की रचना गौतम ने और वैशेषिक दर्शन की रचना कणाद ने की थी। मीमांसा दर्शन जैमिनी द्वारा लिखा गया था और वेदांत दर्शन बदरायण द्वारा लिखा गया था। कुल मिलाकर सौ से अधिक व्याख्याता और स्वतंत्र लेखक हैं।

गार्गी- गुरुदेव ! भवान् वैज्ञानिकानि शास्त्राणि कथं न वदति ?

गार्गी- गुरुदेव! वैज्ञानिक विज्ञान के बारे में बात क्यों नहीं करते?

शिक्षकः- उक्तं कथयसि । प्राचीनभारते विज्ञानस्य विभिन्नशाखानां शास्त्राणि प्रावर्तन्त। आयुर्वेदशास्त्रे चकरसंहिता, सुश्रुतसंहिता चेति शास्त्रकारानामैव प्रसिद्ध स्तः। तत्रैव रसायनविज्ञानम्, भौतिकविज्ञानञ्च अन्तरर्भू स्तः। ज्योतिषशास्त्रेऽपि खगोलविज्ञानं गणितम् इत्यादीनि शास्त्राणि सन्ति। आर्यभट्टस्य ग्रन्थः आर्यभटीयनामा प्रसिद्धः ।

टीचरः- ऐसा कहा जाता है. प्राचीन भारत में विज्ञान की विभिन्न शाखाओं पर ग्रंथों की रचना की गई। आयुर्वेद शास्त्र में ये दोनों चरक संहिता और सुश्रुत संहिता शास्त्रकार के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसमें रसायन विज्ञान और भौतिकी शामिल हैं। ज्योतिष में खगोल विज्ञान, गणित आदि विज्ञान भी शामिल हैं। आर्यभट्ट की पुस्तक आर्यभट्टियनम प्रसिद्ध है।

एवं वराहमिहिरस्य बृहत्संहिता विशालो ग्रन्थः यत्र नाना विषयाः समन्विताः। वास्तुशास्त्रमपि अत्र व्यापक शास्त्रमासीत्। कृषिविज्ञानं च पराशरेण रचितम्। वस्तुतो नास्ति शास्त्रकाराणाम् अल्पा संख्या।

वास्तुशास्त्र भी यहाँ का एक बड़ा विज्ञान था। तथा कृषि विज्ञान की रचना पाराशर ने की थी। इसी प्रकार वराहमिहिर की बृहत्संहिता भी एक विशाल ग्रंथ है जिसमें अनेक विषयों का समावेश है।

वर्णनायकः- गुरुदेव ! अद्य बहुज्ञातम्। प्राचीनस्य भारतस्य गौरवं सर्वथा समृद्धम्।

वर्णनायकः- गुरुदेव! आज बहुत सारी जानकारी मिली. प्राचीन भारत का गौरव सदैव समृद्ध रहा है।

(शिक्षकः वर्गात् निष्क्रामति। छात्राः अनुगच्छन्ति)

(शिक्षक वर्ग से निकलते हैं। उनके पीछे-पीछे छात्र भी निकलते हैं।)